



Mareshh

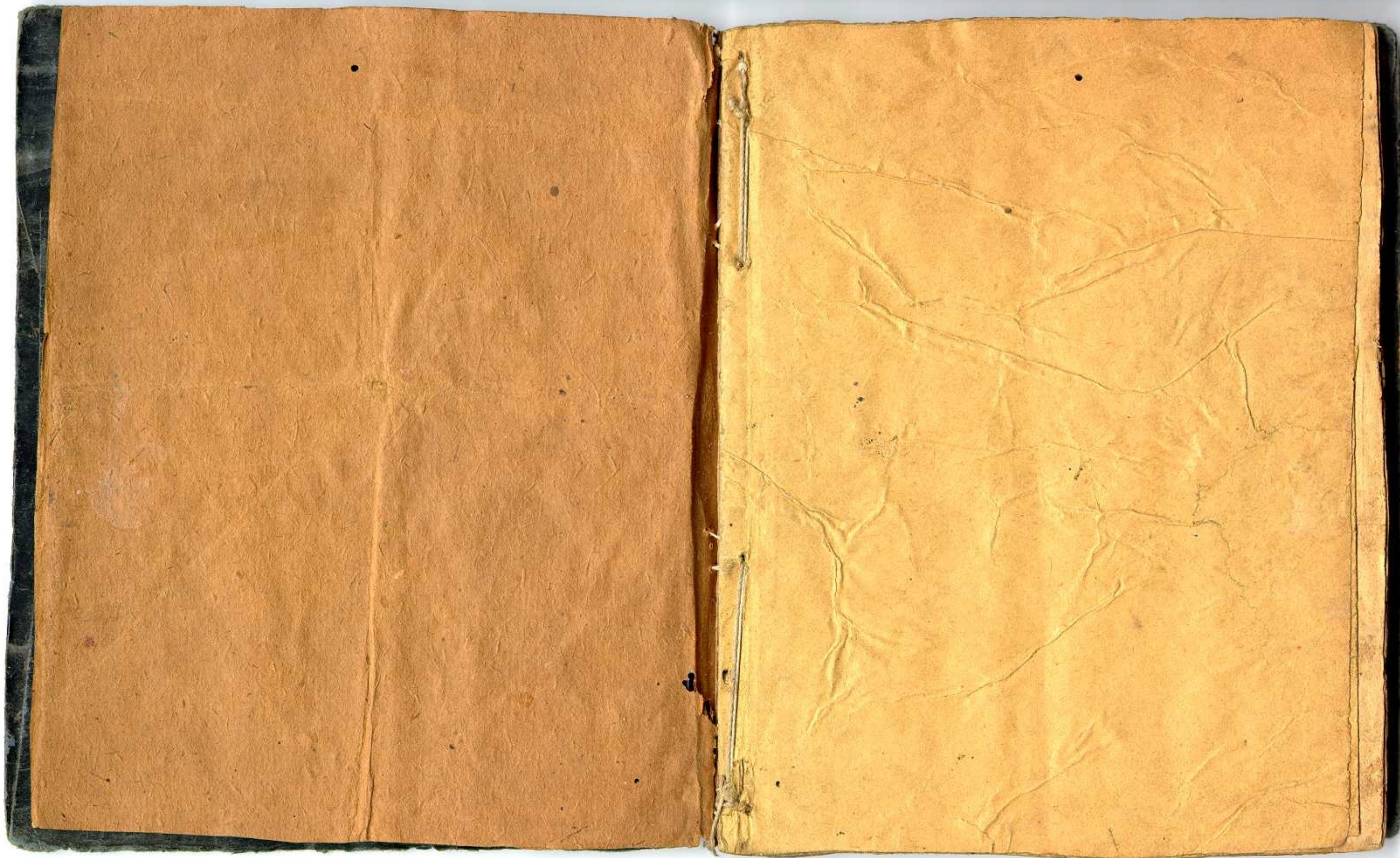
Shrestha

Madhya Pude Thimi

Imya Tool

Kathmandu

Nepal



श्रीगणेशाय नमः ॥ आदिसनातनः हे अवी
 नासी ॥ सकलनीलं चतुर्वासी ॥ ब्रह्मावीशु
 महेशः पुकार ॥ आदिपुरुषः नीलजलके दाता ॥
 ॥ १ ॥ सकलप्राणीकाः अमुकस्वामी ॥ सबपर
 चतकाः अन्तर्जामि ॥ कालयमदुतकाः प्रभु प्र
 प्रनामी ॥ योगसमाधि कोः मोक्षकाधामी ॥ २ ॥
 ककाकलीकुगः बहुतवीषयधाता ॥ दलकपतः
 सदाकर्तव्यवहाता ॥ प्रहर्षनहिहोईः कल्याण
 तुमाता ॥ हरीनामः सुमेरीः भवउतापाता ॥ ३ ॥
 स्वस्वास्वो जोगातः नीर्मलतुल्ये भाई ॥ प्रहवच
 न कहतः वेदपुतना भाई ॥ प्रेमः सगन हरीस
 नाताता भाई ॥ ४ ॥ गगाजोवीरः कृष्णाका
 नामलीजे ॥ नीर्मलनामः तुमहरी कोलीजे ॥ हरी

दयकमलको ध्यानधरीजे ॥ ५ ॥ यथा चतु
 तः सदासतगुरु भाई ॥ जगत व्यापकः नरी पु
 त्रभाई ॥ भुक्तानातेनैः वीचाकरी देखो भाई
 एकैवल्यहैः ओरनही देखा कोई ॥ ६ ॥ ३०
 उगने एतसतसास्त्र सो जकदेखो ॥ दुजे ओर
 नही तुम जगतमें देखो ॥ एकब्रह्मा एदमें चौध
 लोकलेखा ॥ तापा दसनादिकाः अवहाता देवा
 ॥ ७ ॥ यथाचितं सदाः संतोषमें पावो ॥ सीध्या
 वातसबकुठः कही भाषो ॥ सीध्यावातः सबकुठ
 कही भाषो ॥ अधमपाप मतलैः कबहुन भाषो
 ॥ ८ ॥ दृष्टा दलकपतः तजो मन की वीकाता ॥
 अभय हरीनामः जपो प्रकलाता ॥ आसा श्रीमता
 तजो मनः कीजंताला ॥ संतनके पासः शदा फो

मन तु माए ॥ ८ ॥ ज जां जं जाले न्माए ॥ हे
तुम भाई ॥ मात पीता स्त्रीः अपना संजत आई
॥ दुख सो क सोहः क तुम हा सी ऐ भाई ॥ अव
चेतो भाईः ह ऐ नाम सुषदाई ॥ १० ॥ कृ कृ
ल खेलः मती क ऐ तुम भाई ॥ ह ऐ भजत तुमः क
ठा गवाई ॥ काल का भयः तुम को हे क सह आई ॥
ह ऐ के चर्न गयेः तुम सी साई ॥ ११ ॥ अभा
माँदः क ऐ घत में नी हाऐ ॥ ह द म र होत मः म
न लौ लाई साऐ ॥ ह ऐ अर्प ध्यान तुम प
ख ए ताऐ ॥ न ए सो तुम काम को ध वेई मान
का छोऐ ॥ १२ ॥ ट ट ट ऐ मन में जगत को
नाता ॥ जगत नहि कोई अपनाः मात पीतः
॥ भुत भ्राता में अव हाट ऐन को म प ए ॥ १३ ॥

दीवी ना को ई जगत में अपना ॥ १३ ॥ ठ ठ ठ ऐ
हो तु माए जीदगी ॥ अैसे नाकाः कीत नै है तुमा
ए अभी माती ॥ मुक्ति पदार्थः तुम को नही वाती
प्रमदुत काः तुम ते नाहा क ऐ माती ॥ १४ ॥ द द द
म ह जोः तुम ह ऐ का संते ही ॥ जिन गो दीयोः ग्रह
सुन्द दे ही ॥ अैसे ह ऐ कोः तुम ते को हे क मु लाई ॥
दुर्मती मन तु माए हृदय में द्याई ॥ १५ ॥ ठ ठ ठ
क हां जाउ तुम भाई ॥ सकल घट घटः व्याप क है
स माई ॥ नी नाम त संगः ज्ञान को ई पता न पाई ॥
ह ऐ जत संत काः तुम को सेव काई ॥ १६ ॥ न ना
नामः ह ऐ को ली जे तुम म दान ॥ क ऐ चीत में तुम हृद
य में ध्याए ॥ सदा भजतीः भजवान को क ऐ तुम जा
त ॥ प्रेम स्वीतः ह ऐ म को तुम ध्यान ॥ १७ ॥

तता तु लोको करो सुफल कमाई ॥ न देह आई ह
ऐसु मे न पाई ॥ न गवान भक्ति मैं: गर्भ वास मे तो
माई ॥ आवाग वणा का: अर्थ न लुत न जाई ॥
॥ १८ ॥ अथाधी क तहि ज्ञान तु ह्माटे माई ॥ हरी
नाम: वी ता जन्म: व्यं ठां हो जाई ॥ चीत चेत क
ऐनां रां घणा को री काई ॥ मन की मैला: न राखो दे
उ: तुम हो एई ॥ १९ ॥ ददा दाह न पीया ए: मो
ह की धार ॥ साया जं जाल: बांधो मुख संसा ए
॥ बंधन दु तावे: को न लके ह मा ए ॥ जाउ संत
के: पास प्रज कहे तु मा ए ॥ २० ॥ धधा धर्नि तुम
समु क्री: पग धरो माई ॥ संत न के हृदय: सदा
हरी देखाई ॥ नव सा ग: तने का ज्ञान बताई
॥ २१ ॥ एणा ए ह: हरी चरण मन लाओ ॥ प्रेम

मउ न हरी सना गुण गाओ ॥ दुर्मती: अधम तजी
तुम ज्ञान ली काओ ॥ मत संग कर्म न का: मैली
तुम धोओ ॥ २२ ॥ पपा पेटे पेटे सब जन्म गमा
ओ ॥ हरी का गुण: वाद तुम नहिं गाओ ॥ अंधा नै
जग मैं: भूत भुलाओ ॥ कही कही धं ठा तुम जन्म
गमाओ ॥ २३ ॥ फूफा की री की री: पेटे मो ह की फू
सा ॥ फी री अज हुन हो ए: नारी का पासा ॥ संत चर्न
धरो तुम ज्ञान की आसा ॥ गुह उ पे दे स मे तो: प्रसकि
त्रासा ॥ २४ ॥ ववा वचन: बो लो अमृत की वानी
॥ प्रेम मने ह ध्यान: करो तुम ज्ञानी ॥ ब्रह्म ज्ञान से म
न कही ले उ दानी ॥ कतु क वचन: मुख मैं न कहे वा
णी ॥ २५ ॥ भभा भुली ए लो: मन का तुम ह मजु
ओ ॥ नीर्मल ज्ञान मैं: तुम हृद मैं धाओ ॥ भव

साग तुम फीरी नहिं आयो ॥ आगे गर्भ वाह में
तुम सही कहिं आयो ॥ २६ ॥ माया मोह देना
ई वल्लकी घोनाही ॥ बीना माँस खाये पल्लु नयो
सब संझाही ॥ जाल लीय प्रेम फीत अतीरी साई
॥ कर्म देखी नीहि दात सब नानाही ॥ २७ ॥ प्र
याय हरे हतहिं दोई धाँवा ॥ ताले दीन दीनः ह
म कहत पुकारा ॥ पेट की धंढानहिं सुनत बहेरा
॥ भजो हरी का नाम मग मग ॥ २८ ॥ टट टट
हरी नामः जपो मत जाई ॥ जन्म जन्म काः तुम
सब पाप दुताई ॥ फिरी प्रेम रवीते तुम म
न प दुताई ॥ ऐई ऐई प्रेम काः तुम मुकुंद बा
ई ॥ २९ ॥ ललालाल गोपालः हृदय में दवाई ॥
॥ ताले सुन्दर देहः यमत काट पाई ॥ तर्हि ता

न तुल्ये उपदेश बताई ॥ शंत चर्ण कोः ईक वहुं
त आई ॥ ३० ॥ ब्रवा बही गुरु काः को सेव का
ई ॥ अम अगो चल काः टूटा बताई ॥ अंघ्रि अं
भा बजीने समझाई ॥ दिन एक में तुम पाहुता
ही जाई ॥ ३१ ॥ समासत गुरु कीः को त कहें वरा
ई ॥ माहि मा मुख में बली न जाई ॥ शत संग स
त साह्यः को तुम भाई ॥ फीरी काल नयः तुम
एन ही आई ॥ ३२ ॥ बघा घी चीली उमंत अ
पने आयो ॥ माया फुल फंद अंठः पल्लव में तोरा
ई गला घी गलाः दगा बता दे मोराः चलत चले गई ॥
जाहां वसे राम की देरा ॥ ३३ ॥ शशा शकुल वी
ष प्रमन से त्यागो ॥ शत संग शत साह्यः लीयत
अमें भागो ॥ तारा मन ध्याए मेरे नदिगा जागो

॥ हृदयमनमर्थेः जो ती प्रकास आगो ॥ ३४ ॥
हहाहं स दादासीवः बबानी ॥ बांको गती जग
तमेंः कोई नहि जागी ॥ प्रोग रमाधी का भाईः
कठीन हों वाणी ॥ हारी हारीः संत सब भर्म नुः
लाणी ॥ ३५ ॥ राजा ज्ञान ध्याएः खोजो पुण्ड्र
रुभाई ॥ पुण्ड्र ब्रह्मा तुमकोः सहज सीली जा
ई ॥ गुरुवीना भव सागाः तो ए थाई ॥ फीरी
काल का भयोः तुमो देखाई ॥ ३६ ॥ क्षमा
से मा को ललात की वीधाता ॥ सीवडा का
प्रोगी कोः मोक्ष दाता ॥ तन माण भुङ्ग करीः हृ
दय में ध्याओ ॥ ३७ ॥ वीषय ए सद्योतीः अमृ
तरु पीजे ॥ प्रोए कोई काम का न कहुन की
जे ॥ साधु संत काः तुम सेवा कीजे ॥ जीय मार्ग

काः तुम अन्न पद लीजे ॥ ३८ ॥ गुरुवीना
उपायः चले तुमाए ॥ ता गुरुका सेवा कर्त नः
ही गमाए ॥ ती ए लोक मेंः एक ही नाम साए ॥
दुनीया मुर्ख एः सब खराब करी दाए ॥ ३९ ॥
आगे भुखकाः तुम ते पुण्ड्र करी दाए ॥ लख चौए
सीकाः कोई को ए काए ॥ कुल व्यवहाएः सदा
कर्त वांवाए ॥ पालोक का कोई को नः सुखी
चाए ॥ ४० ॥ भक्ति जन सब को प्रीती प्रीयाए ॥
वनी जाई हे सब काम का जंतु माए ॥ हम ज्ञाया
हम की लेख च ए हमाए ॥ न हम के पादे वी गहरा
ई तुमाए ॥ ४१ ॥ सत सांग सत सास्यः ज्ञान जमा
काई ॥ हृदय को खनी कलम बनाई ॥ सत
गुरु वी चार की स्थाही बनाई ॥ हृदय कमल

पञ्चमै सोही लेखाई ॥ ४३ ॥ अनुभव ज्ञान ता
ले उपजत आई ॥ अनुभव महल में ध्यान गुरु तुले
वताई ॥ अलख गुरु स का तुम लाय लपट्याई
॥ बनत वनी जाई ॥ तुम ही गुना गाई ॥ ४३ ॥ धी
ए पदार्थ ॥ गुरु उपदेखवनाई ॥ जैसे दुनीया
गोपुत्र का प्रेम सेवकाई ॥ ताँके गुण प्रेम ॥ सदा
गुरु सेवकाई ॥ सत गुरु नी जत ॥ अत मोल पा
ई ॥ ४४ ॥ फिरी काँकरी हो जग में तुम आई ॥
कुशल पद आनन्द ॥ माहा सुषपाई ॥ अतै
प्रताप है ॥ देखो हरी नाम का आई ॥ सभा दुपती
को दीयो हरी ने लाज वचाई ॥ ४५ ॥ गज ग्राह
ल ॥ जल गज कुलेन पाई ॥ नं गौ पावन प्रभु ह
री दो र्त आई ॥ फादत कृष्ण गज लीयो जी

उबचाई ॥ धं ए गज का आग्य ॥ पर्स सुषपाई
॥ ४६ ॥ खादनहि भाई ॥ नुन बीनात को टी ॥ गु
ह का मंत्र वीना ॥ बुद्ध नही देह धरी ॥ मैला कपण
सा नु ए वीना एहि उजरी ॥ ब्रह्म ज्ञान वीना न
देखाई हृदय हरी ॥ ४७ ॥ दया धर्म वीना सो आ
नहि नट एरी ॥ दी प्रक वीना घट नयो अधि पा
री ॥ नीर्मल आत्मा ॥ कीयो तुम धमी लाई ॥ वीष
य मथाते सै ॥ तुम मन्त्र म ठाई ॥ ४८ ॥ तासे शत
गुरु तुम नहि देखाई ॥ सते दाव जात ॥ कर्जे ग में
भुलाई ॥ फापी हरी नामाले तस व अडाई ॥ सु
नट नाटी ॥ देखत मत मुसुकाई ॥ ४९ ॥ जन्म दे
त ॥ हरी देखी तसि सट माई ॥ पसु सै पसु नयो न
मो ॥ तुम सब नट नाटी ॥ सत्य अहंते ॥ वीचा कर्त

नाही कोई ॥ हे पासे अमृतली घृतुं मपीवत
नाई ॥ ५० ॥ अमृतपीयवीनाः अमृतनी हे
ई ॥ गुरु उपदेसवीना जानत नाई ॥ तासे को
बहु बीधीः गुरुसेवकाई ॥ गंगा जमुना नादि
तुंम अगम बहाई ॥ ५१ ॥ स्नान कर्तवते तो
ग्रह सोक्षकी द्याए ॥ घातमें ना उखेवतः नहिं
मुख गमाए ॥ हृदय योग ध्यानः कर्तनाहि वी
चाए ॥ मोक्ष का मार्ग मीतायोः ना ऐका द्याए
॥ ५२ ॥ अवकै से जाउ भव सागर उमपाए
॥ हरि मुखेरी काती देईः वीषय जं जाला ॥ हृ
दय कमल मेंः को कृष्ण की पीयाए ॥ स तो
कामनाः कार्ये पुर होई तुमाए ॥ ५३ ॥ ह
मे सहई मः वीचाए सुख मणा नाई ॥ वीषय

कर्म द्योले सब वी स्याई ॥ समभाव परम सुख
अन मोल पाई ॥ तन मन अपना करी देह थी
एई ॥ ५४ ॥ धरो तुम नीरंकार ध्यान ल उलाई
॥ हंस अपना घाट सु ग्री शमु ग्री आई ॥ भुज
महल मेंः अन हृद वाजा सु नाई ॥ उठी उठी च
लत सुख मना आई ॥ ५५ ॥ तव नीरंकार जो
ती घातु से देखाई ॥ अैसे पर्म आनंदः सुख
क वहुं न पाई ॥ अंकार की नेद वीचाए को
तुम नाई ॥ वैरी नावन को कालः तले साधा
ई ॥ ५६ ॥ देवो तुम लपकाः गुरु न प्रोवै
ते ॥ तैसे दीपक काः प्रवन आई साते ॥ शब्द
वाहे को मन काम प्रोवै ॥ शव को यम दुत
पकरी मुकुंद साते ॥ ५७ ॥ द्या का माता पी

ताः स्ववर्णलेखमाए ॥ योगीकावैरी सब
नारी पटीवारी ॥ प्राप्ता श्रीस्ताः दुईचीतका
अयो वैरी ॥ नारी कर्त सबतः गये हाटी हाटी
॥ ५८ ॥ तीन लोकमें नारी सबका बीगारी ॥
॥ हृदय एज यो गवीगारी दीयो नारी ॥ प्रव
कहे कउनः उपाय कटे नारी ॥ जाउ संत के
पास नारी अर्जल गार्ड ॥ ५९ ॥ कर्त कर्त से
बाबहु त दीन वीतार्ड ॥ तव अनुभव फल
सैं काल भये सीतार्ड ॥ धंण धंण हरी नाम
बीलाएव चार्ड ॥ हरी भजन कः पर्म सुख पा
ई ॥ ६० ॥ जल सैं उपजी जल हीत कमल
नारी ॥ काम को धकात जो तुम मनस मुका
ई ॥ वेद पुएण कर्म साग वरि प्रार्ड ॥ प

सुपंदि मनुष्य सीत भयो बहि गार्ड ॥ ६१ ॥
अधम पाप दि पाई काल देखी दार्ड ॥ नारी भोग
कर्तः एकांत में गार्ड ॥ एकांत हृदय में ध्यान
कर्त नहि कोई ॥ हृदय चीत बुझ कोः तुमाए
नारी ॥ ६२ ॥ निर्मल प्राप्ता तुम कोहे कवी
गार्ड ॥ तजो मत कुल अवहा संशाए ॥ प्रवीना
सी पद कोः कोः तुम वीचाए ॥ ऊठा दर्प न धनस
पतीवाए ॥ ६३ ॥ जग में कोई नहि हेसा अतुमाए
॥ अब हुन चेतः तुम सुख गमाए ॥ हरी नाम जपी
सुधागयो स्वर्ग द्वाए ॥ हृदय ध्यान कः भव उत
ऐपाए ॥ ६४ ॥ सब योग प्राय पाः मन मु मुकाई
॥ वीयोग नय पाः तेई दीन वीतार्ड ॥ सुख अ
ज्ञानी वीपती दुख शंहाई ॥ पतंग दि पकः देखी

जरी मरी जाई ॥ ६५ ॥ देखो लालचिमटे म
दरी फट फटाई ॥ शब्द सुगा प्रीयाएः मारत
वानधि पाई ॥ स्त्रीका मोह देखाईः गज कुं
पंगी एई ॥ पुत्रका मोह कलकः कुतल प्रात हो
एई ॥ ६६ ॥ जाल वनाईः मकलः अल गल
काई ॥ जबकी ए जाल पटेः आई मकल खाई ॥
नारी मोह देखाईः नलका पलुवनाई ॥ धीका
ए जन्म नयो तु मा ए भाई ॥ ६७ ॥ साधु संत
ना ए कटेः अत्मा तीर्थ भाई ॥ ओ ए कटे
तुमका सी प्रीया ग जाई ॥ साधु पुजा दूद
ध्यात प्रेम लगाई ॥ ओ ए कटे तुम प्रीती पथ
एई ॥ ६८ ॥ साधु वत मत संग कटे जान पाई
॥ ओ ए व वत कोः दिष्टो सब का द्यो एई ॥ स

धु जाप जप अजपा बीधान पाई ॥ ओ ए जाप ज
पदिष्टो तुम सब का बीदाई ॥ ६९ ॥ साधु संत
नई खायोः तुम नी द्या ए भाई ॥ पी ज ए नी त्र मै
ना वैठीः दुद भात खाई ॥ प्रलहा द दै ते हटे ना
म जपी घो ग पाई ॥ गनीका हरी नाम जपीः स्व
र्ग वीमान आई ॥ ७० ॥ दुलीया पापि ह्यो
जं जाल मफ माई ॥ दोता व ए सब शंग ताहि
का गुण होई ॥ वाय फास म द्योः एकै मोल वी
काई ॥ नादि ना चलतः जहालगे चली जाई ॥ ७१ ॥
जब सीली गयः तब गंगा नाम कहि जाई ॥ घो
गी घो ग कटे तोः मत ब्रह्म होई जाई ॥ जात कसा
हिः घल्लु घा पालन क एई ॥ देत गा ए घल्लु घा
सब का शा माई ॥ ७२ ॥ कुकर्म कुबुद्धिः तजो

मनकी सगई ॥ दुख लोक घटः प्रपना उप
जत आई ॥ सित झंग पाईः के जल नयो प
थई ॥ आगी साठ पाईः ल्याहा नयो लाल
वर्णई ॥ ७३ ॥ प्रपना ज्जी दगीः वीतत न
हि जानत कोई ॥ पेत की धंधा मुख तहिः घ
टै एक भाई ॥ लोभी पापी का हृदय चेत
नहि कोई ॥ सब को शम आया नहिः सम
त भाई ॥ ७४ ॥ कहुं देखा हमने स्याम सुन्द
र का ॥ सदा हमे सवी चाएः हृदय हरी का ॥ त
वसें इंधी बुझीः नहि अपने घर का ॥ अरु स
ए प्रंत कोः जै सैं कात स दरी का ॥ ७५ ॥ ज
बसें मन लगाः हरी चरन लाका ॥ अरु म पुमें
एखाका रहै बुझि का ॥ मन बाना चेताल वजा

ई अनह दका ॥ हृदय जवंधा नल जोहे मन का
॥ ७६ ॥ सो मन रहै तगा मन बहिन गका ॥ जो
जाको सुलः वस्तु दै तळ दीका ॥ वीना तळ दि न
ट की फी रैन गका ॥ मन तु क्यौ नहि अलखल
आया ॥ ७७ ॥ जीवेगी एक योगीः तुम सब रहत
पाया ॥ पठै तु जे तु साएः मुक्ति न होई काया ॥ ज
गमें व्यर्थ तुम न दूक दू जन्म गवाया ॥ माया मो
हमें झुली हरी नाम वी सगया ॥ ७८ ॥ गंगा जमु
णा बहि हैः कोई लखे न पाया ॥ अधम पाप सब
के घट में दया ॥ ईश्वर सवद ब्रह्मः जीन के घट
में आया ॥ मुख्य ग साए कोः नहि प्रतीत पायाः
॥ ७९ ॥ मन तु म क्यौ नहि योग सभाए ॥ अरु स
पथ काः कए तु मवी चाए ॥ नीर्मल बहत हैः अ

मृतकी धार ॥ योगी एक वसंत है नहिं की नार ॥
॥ ८० ॥ पारतर्क कही नहैं वाहना उ नवे ॥
॥ गौहिरी को तमैं एजको अपना दे ॥ प्रादि पु
हसका हे बहादर वा ॥ गगन मंदिल में ॥ प्रा
दनको तु मा ॥ ८१ ॥ कुलक कुलक की ना
चंड उजीया ॥ एक नैयामैं नदिघावुर्तः ती
र्मल था ॥ भुन्यनयो हः बहास वपरी बा ॥
उठी कुलक दे बायो ॥ प्रगित की जाला ॥ ८२ ॥
लीखी वीधातारुख प्रमत्त सीताई दा ॥ प्रव
हामत ही कौन जायः प्रसकी बा ॥ पुण्य पा
पकोः हसने भुजकरी दा ॥ तव से हमा ॥ तन
की बेत उजा ॥ ८३ ॥ ॐ कारकी गती भेद
अगम अपा ॥ हरी कृपा वीना को नक

हसके पा ॥ ब्रह्म ज्ञान वीना तुमको नहिं अधी
का ॥ कहे जो ती गीरी ॥ यह अर्जह मा ॥ ८४ ॥
योगी योगको एका न अजपा जपाई ॥ प्रेम
मग्न अभ्यास को तुम भाई ॥ दसई निष की
मोह दे उः ज्ञान जलाई ॥ मुक्ति यतन कातज वी
जको तुम भाई ॥ ८५ ॥ वीएग अभ्यास कर्म
नव स्य होई ॥ तुरीया अवस्थाः तुममें ला नएई ॥
भुन्यकाः मुहुर्त ले उदिन धराई ॥ मन से जव ब्र
ह्म जोती उठी आई ॥ ८६ ॥ लेचलो हम तुम
अगम पुरुष जना ॥ तन सुन्दर हैं मन नयो तु
मा एमलीना ॥ तंजी दीयो वीषय का मोह सब
अपना ॥ मली मली दर्प न धोई सब अपनाः
॥ ८७ ॥ नीर्मल नयो तुम देखो रजगना ॥ क

हे जो ती जी ऐ मनै मन का मथना ॥ तब हम ग
गतः भुने महल का जाना ॥ एक मन का हा
ऐ जीयो मुलुक्की एना ॥ ८८ ॥ मन पवनः
का एक सीला यो तुम सजना ॥ जो को ई कल
के कहे तुम अपना ॥ बीना गुरुव ता य तुल
हेन को सपना ॥ कपती मन काः उपदेसन क
ऐ अपना ॥ ८९ ॥ गज की चाल नहिं जानत
खलु कु एई ॥ भोगी मनै नहिं जानत समा
ठि को ई ॥ जो मल जी उ कया जाने एक मल वा
मनाई ॥ पुरुष कया जाने प्रसुती स्त्री को पी
ए को ई ॥ ९० ॥ मान सलः कया जाने कुप
दा दु एई ॥ हम का गती नहिं जानत का गभा
ई ॥ जो दवाल कया जाने जवान जै मना

ई ॥ जन्म का ग्रंथा कया जाने चंद्र सुर्जे को भा
ई ॥ ९१ ॥ ब्रह्म ज्ञान नहिं जानत मन वीष य ए
पाई ॥ तब नहिं जानत जी उ ईन्दीय साथ पाई ॥
सौ से कया जाने वाजा हटे वेन बजाई ॥ सुख कया
जाने महि साः संतन को नाई ॥ ९२ ॥ पंदिता
नहिं जानत मोक्ष पदार्थ को ई ॥ दुनीया नहिं जा
एतः तन तार्ण नाई ॥ नाकि जन नहिं जा एतः
गुरु सेव काई ॥ को को ती गुरु साधु बीनाः मोक्ष
ए हो ई ॥ ९३ ॥ आत्मन पर पुजा कृतः देह वै
ठाई ॥ ध्यान कर्त मन वाहे ग ई ऐ साई ॥ पुजा
जप ध्यान बर ठ ग ईः सब को नाई ॥ पुरुष बीना
पुत्र मन वीना फल कै लै होई ॥ ९४ ॥ का कृत
ए लो हैं ॥ सवन के अंग ॥ कसती मन काः कृत

नजनमें नंग ॥ ओं धं प्रभी मान लोः सव
लाने संग ॥ सुख गमा को ही नही जान का धं
ग ॥ ८५ ॥ सत शंग ज्ञान मन में चहत नाहिं ग
॥ साधु संत का अपमान कर्त नंग ॥ साधु संग
कर नाहिं हनाण कर्त गंग ॥ नरी साई मन मुमु
काई नाहि कर्त तंग ॥ ८६ ॥ गाँ सुध नहि हो
ई मुक्ति न होई ॥ हजा गुहू के सुख जानी
न होई ॥ लाभ धन संपत्ति मन संतोष न होई
॥ ८७ ॥ बेस्मान अघाई हजा पुहू स दवई ॥
प्रसदुत न अल साई मुदी को ती धोई ॥ जन्म
न साई पेट न अघाई ॥ ऐन दिन चंद्र मुजे
न अल साई ॥ ८८ ॥ योग समाधि के सब अ
ल साई ॥ अलसी अल साई कवत जी जाई

मन माने नाहि प्रसन्नाः सुखंदर साई ॥ ऐई ऐई
तुम पाये मन पछताई ॥ ८९ ॥ अब चेतो तुम
बव दानाई ॥ जब काल आवे तुम कह भागी
जाई ॥ स्त्री पुत्र ओवाई मसान में पहुती जाई ॥ सु
दा जलाई ॥ को ही नाहि प्राई ॥ ९० ॥ वो हे
पुरुष का तजवी ज कएई ॥ सै सै वेई मानी स्त्री
का जगत मो हाई ॥ तुमा ए हृदय में लाज सर्मन
हिं प्राई ॥ जै सै का तीव्र का कुकु पुहू स भयो भा
ई ॥ ९०१ ॥ एंगा घोः योगी कपल मन एंगाई
योग मुक्ति की तुमा ए गुहू न वताई ॥ कपल
एंगाई तुम ने बवनी प्राई ॥ का कही हो तुम ज
ग में भर्म भुलाई ॥ ९०२ ॥ तीर्थ वर्त तुम सदा
कर्त की एई ॥ सुंद नाहि दे खत तुम लो भाई ॥

मुमुक्षुई वधनकी लुती साई ॥ ज्ञानध्यानसे
तुम मत नंगाई ॥ १०३ ॥ भुषपीयासः तुम
महे नाहि जाई ॥ माउत नीख तमः लेत साई
॥ घाकाम अलखीः आघो तुम सी साई ॥ दुख
सोक देखत मत महुताई ॥ १०४ ॥ वधार्थन
ले जाई वीध गठरीया ॥ कुडी ठगी मागी धन
संपती कमाया ॥ लुतीली घोहे पापकी गठ
रीया ॥ जब यम घेरे दोरेः अपने काया ॥
॥ १०५ ॥ तीरीया रोवे तुमा एलत दित काया
॥ धन संपती होयः तुल्य तुमान भरी काया ॥
अधम पापलो नः घत तुमा टे दया ॥ धर्म
कर्म दान पुण्यः मन नहि माया ॥ १०६ ॥ प
रधन हलने काः ज्ञान तुम कमाया ॥ जोरी जोरी

तुम धन काः थैली जमाया ॥ जब प्राण की दाज
घः नहि हात तुम पाया ॥ पापी यम पुमैः मुकुं
दायाया ॥ १०७ ॥ ऐवत वीला पः कही मन पदु
ताया ॥ औ सैं वीपती का अवमै नहि पाया ॥ ना
तं मन हरीः कहीः २ः आ सुव हाया ॥ औ ले हुता
हाट जोती गीरी आगे बताया ॥ १०८ ॥ क्या कोई
जानेः नैया अपने घटकी ॥ बहि नैया में नहि व
हाट दीन की ॥ ताप ब्रह्मा की घट महे दन जा
तकी ॥ गहि ऐन की या बहा अउम अपाएकी ॥
॥ १०९ ॥ पाले नहि सकेल हरी चतकी ॥ अ
सु कसल हेव हग जनमै अतकी ॥ नैया नदि
या गजन की चमै लतकी ॥ अलख नीजन कु
ल ॐ का एवटकी ॥ ११० ॥ महा मनुज में नैया

मोटे अंतकी ॥ ताप ए बेवन बाला अतवल
की ॥ उसकी नेद आईः पंचम देवकी ॥ पा
लगायोः गुणी गुनी साधु संतकी ॥ १११ ॥
नी गुनी मतकीः दिल में अंतकी ॥ अनुभ
बहालः सुतो वात दृष्टकी ॥ मुरु खन जाने
जग में नतकी ॥ मुक्ति न होई पधार में सी
पटकी ॥ ११२ ॥ थारे दो उ मुवा वाटना सुधा
बने आई ॥ दगरी बेचने आई चीक वकी मा
स आई ॥ लौकी गुल लील उता त चाले गु
ई ॥ वरी का पानी लौती बेटे टिका जात आई
॥ ११३ ॥ चलत मुसाफी टैः थक ट दग आई
॥ अगी नी जली ईत हा चुल्ह मुसुकाई ॥
पह वीठि सन को ई वीले पाई ॥ वधाली

जली को ई नव ताई ॥ ११४ ॥ जहा घटें जीती
कस्त आई ॥ अलग चा वेद सैं कहु न दुवाई
॥ पहि पहि हम पु ए जात कसाई ॥ ध्यान धी ज
जात नीर्मल पाई ॥ ११५ ॥ अग स पंथ सत गु
हव ताई ॥ देस हमा ए कुवा वावरी जाई ॥ गछे
नी ए जे नहिं धुप न द्याई ॥ गुप्त नेद की दि य जो
हुटि आई ॥ ११६ ॥ वीना सोल वध ए स खो
जात पाई ॥ उई मुलकी द्य घामें हम योग सी
काई ॥ अउ स अगो चलः सत ध्यान लगाई
ताप नीर्मल हमे गगत देखाई ॥ ११७ ॥ स
नप वन का स सत वल लगाई ॥ तील भूत व
ल में घटे नव धाई ॥ तीन लोक में सब सुन्य का
में ॥ ब्रह्म जो ती उठी आ फे आफू देखाई ॥

॥ ११८ ॥ कलनाई भ्रातृगुरुनेदवताई ॥
॥ जोग्रजमाईः ब्रह्मनेद उनपाई ॥ पहिपहि
पोठीकोए सकेकोई ॥ पुर्वजन्मवाहना नी
नाकठिहेनाई ॥ ११९ ॥ ग्रहसवगगग्रंठा
कीस्कास्मकाई ॥ नजाउघटघटः हसधोल
वजाई ॥ स्वासाखाली जातहें दिघोबेधावः
हाई ॥ तीनजगतमेंः मोलनहिपाई ॥ १२० ॥
ऐसेमहगा मोलवस्तु देतद्योएई ॥ चौधलो
कमेंकोहीपताएपाई ॥ तुमनेनाहाकधुरमें
मीलाई ॥ एकस्वादाजवग्रपताप्रदजाई ॥
॥ १२१ ॥ धन्यभाग्रहें वाको कहिजाई ॥
॥ ब्रह्मज्ञानतुमहृदयजमाउनाई ॥ अवीनासी
पदउपगतआई ॥ जैसेदहिसचनकोः तुम

जतनकाई ॥ १२२ ॥ हृदयग्रपताकोसतस
भनाई ॥ पीघानको वीनादुदकाबुझागाई ॥
जन्मसतलीसुतुमज्ञानगहिंपाई ॥ कटीकटीधः
धाव्यठीमटीजाई ॥ कोटीघातकोतुमनेदत
पाई ॥ १२३ ॥ स्त्रीसंपत्तीपुत्रवहुतप्रीतीलगाई
सतगुरुकाः सेवाकर्तप्रलसाई ॥ स्त्रीसंपत्तीः
त्यागकोचीनसमनाई ॥ ताकोसाथब्रह्मज्ञान
प्रापचलेआई ॥ जैसेधनीकासाथपादेनीध
नीआई ॥ भक्तिजनलोहेतकचमसवातआई ॥
॥ १२४ ॥ जलमीनदिनः एकनीएअलगाई ॥ ह
ईमनभुलेहृदयहटीनाई ॥ आवागवनकाभय
दीघोमीताई ॥ फीरीजामेनहिंकासकाजआई ॥
॥ १२५ ॥ पहिपहि सबैलोकः पागलभईः लीलीली

सी नई सबै सुखी है ॥ दुनी पाप द्यत प्रेम
नाहिं आई तील न कृत पापे हृदय दिता
ई ॥ १२७ ॥ प्रेम प्रीति सदा कर्त स्त्री सेवकाई
॥ नल क हृदय जव तु हे नाहिं देखाई ॥ हृदय ज्ञा
न तु म को देत ज लाई ॥ १२८ ॥ प्रवी नामी
मा एग को देत क ताई ॥ ता से हरी नाम काः सु
मे न पाई ॥ तेहि पाप में बीष घ चुलाई ॥ अ
बहुत चेतो मुख धि थाई ॥ फिरि फीरे साहि
नाहिं का उधाहि ॥ १२९ ॥ योग समाधि जप
तप नाहिं सब बीगाहि ॥ स्वर्ग लोक में सुग
का बोलाई ॥ ब्रह्म नहिं बीषा द्या घन पाई ॥
तेहि का एहि में नहिं जाई ॥ १३० ॥ वैराग्यो
ग सजान का बोलाई ॥ मैथुण स्त्री का ब्रह्म

नाहिं पाई ॥ क्या को ह म ब्रह्म नाहिं जाई ॥ नहे
जोती गीति मुख का लाज नाहिं थाई ॥ १३१ ॥
साधु संत का प्रीति कर्त नहिं कोई ॥ एहो पचा
सहात काः फीरो ने मुलाई ॥ अधमी नाहिं काः
संगत साध पाई ॥ हृदय एत योग का सब बीगाहि
॥ १३२ ॥ अनुभवत लाउ का कीयो तुम भुलाई ॥
हई ध्यान बहि नाहिं का भाई ॥ प्रवक्त न बसाग
एक वत ही जाई ॥ काल नय को सब का जकटाई
॥ १३३ ॥ अ नय पद को सब नुली बीसलाई ॥ ह
दय हरी को नाम सब का धि नाई ॥ नां ए घन हरी
को सोती नीवताई ॥ १३४ ॥ संत न प्रीति क एलो
क लाज बोई ॥ प्रवतो वातः फैलि गई जानत सब
कोई ॥ मे ए मत तो ही चर्न चीत लाई ॥ कोती

प्रान्त के कर्म से तेन कोई ॥ १३५ ॥ बौरा गयो
गदे की दुती पादुई ॥ सुन्दर ना ऐ देवत मत
मुमुकाई ॥ नारी पीया ऐ हरी नाम जपे न कोई ॥
॥ भुलि रह्यो ना हाक जं जाल में फसाई ॥ १३६ ॥
॥ १३६ ॥ यह सुख सदा न रहितु माए भाई ॥ ज
वानी जौ न त सैं ॥ सब वी गा ऐ ॥ अंत स मयः
वीए ग सब का नाई ॥ मुक्ति पदार्थ हात लगे
न क साई ॥ १३७ ॥ कहे नारी का गुला मूले
बकाई ॥ लख चौ एसी तुम ते बरन पाई ॥
आई गयो तुम को ॥ गवना नागे भाई ॥ अ
वकाक हं गे तु माए मत प दुताई ॥ १३८ ॥
जग में सब धाम ॥ क्या काम है भाई ॥ ईस धाम
में तु माए भाकि न होई ॥ बावरी धाम में ॥ गग

ए वाजा बजाई ॥ नीगुली होय तुम अकेला रहे
नाई ॥ १३९ ॥ बाहि पाकि तीन ज्ञान ले उलिकाई
॥ जाप जपो तुम अज पावी धी पाई ॥ अउ म अजो
चर पंथ में जाउ नाई ॥ चंड सु र्ये वी ना ॥ तहा हो
तउ ज एई ॥ १४० ॥ चलात चले जा उरुत गुरु तुं
ले देखाई ॥ भुए म हल में ॥ अन ह द तु ले भु ना
ई ॥ अस न ध्यान से मत जाई वी लाई ॥ भुद्धि बुद्धि
तु ले धा द न ही आई ॥ १४१ ॥ दस ऐ चम ऐ पेत
की मुख का आहाए ॥ नाहे पायो अस ए पद को
बाए ॥ स्त्री मात पीता पुत्र बाँधो जं जाला ॥ का
द्या न ग ए ज को ॥ काहे वी गाए ॥ १४२ ॥ सती स
द अंकु धिका जन्म तु माए ॥ उदये अरु क्या क
हे स ज न ये तु माए ॥ एक दिन यम आई ॥ तु मा

रेखाए॥ ग्रहापदेसहैः धातुनहि तुमाए॥ १४३॥
चितचेतकरीः मनसमकायो तुमाए॥ ध्यातक
रीदेखोः हरी दुनहि तेए॥ कहे रे मतवधाकी
सुधितत वीए॥ गुरुवीनातहिः पाई तुल्लेदग
ए॥ १४४॥ अपनाधातुली लो तुमाए॥ कु
लधाहै ॐ कारपरनी टंकार॥ वधापंच
तत्वमनसे न्याए॥ वधा खोजत सबइं तत
गयो हाए॥ १४५॥ सर्वकर्म त्यागे वीनामण
धीनहि होई॥ सब बुद्धिहि न^{नीता} तत्व नही दे
खाई॥ कोती कीया बाहे कहे मोक्षन होई॥
सब कीया हारी गयः कोई पतान पाई॥ १४६॥
वेदपुएण धर्म साध्य सुख का जु थाई॥ दुनी
पामती अंधक वतए जाई॥ हृदय का प्रामा

ज्ञान कवहुंन जु थाई॥ सदा नीमल पवीत्र सा
न भाई॥ १४७॥ नृप सुवता यो नारी मोह दे
खाई॥ तासे आत्मा ज्ञान बचन ही पाई॥ आ
सा कर्म सब याग करे जीण सम भाई॥ मन सा
रे प्रमन दुटे मोक्ष होई सोई॥ १४८॥ सब
नृद्योर्त नहिः आत्मा मै वधाई॥ सब कर्म करी
गर्भवास उपजत आई॥ नहि से तो गर्भवासः
नीकर्म कएई॥ अंमि गरी वसः वन ए आसा
मैं फुहाई॥ १४९॥ ग्रह ज्ञान हृदय धीः वरे क
री नाई॥ कोई होय तोः लाभ मैंः लब्ध दुई होई॥
कहे जोती गीरीः ग्रह ज्ञान मन मोटे पाई॥ हृदय
ॐ कारमे उपजत आई॥ १५०॥ कान प्रबला
करः से के भाई॥ कान सिंधि स्माये जग मैं कोई

॥ काल काल बाध जग में आई ॥ काल पाव
कल जले जग उप आई ॥ १५१ ॥ सुत नहि
अबला कर के नही ना कोई ॥ मरण नहि
लिंछु समाध बहु उपाई ॥ धर्म न जले पाव
कवहु जत नाई ॥ नाम न बाधः काल को
टि बल होई ॥ १५२ ॥ हृदय ही नाम जपो
मरण बाध वाए ॥ बाको चक्र सुदरसन हेर
खवाए ॥ जल घास दखत पृथी जी उवसा
ई ॥ कोई भवचे जाच काल में पी सखाई ॥
॥ १५३ ॥ कीलै कीला सत जन सार्ज जाई ॥
कीलहे आदि पुरुषः संतनव चाई ॥ १५४ ॥
सावि सभाएः सुतीन कुतेश गरी ॥ कथाध
एतुमने पानी हाएली ॥ सील शनेह कील

गाउ एसी ॥ थाए नो जल तुम चहुनाए
॥ १५५ ॥ दल की न जाय चकती मेन पस
ए ॥ गहि ऐकवा हमारे उपर उमए ॥ पीघा
हमारे वसत अजवन गए ॥ सजन मीलणे
को हमारे हप कूटी ॥ १५६ ॥ वासपें ताएः जल
नहि रहि नाई ॥ दुनीया का हृदयः सह जानहि
भहाई ॥ धनवीमा दुनीयाः का सुख नहि होई
ब्रह्म ज्ञान की नाः मनुष्य का मोक्ष न होई ॥ १५७ ॥
कीयानी ना ज्ञान कहु कामत आई ॥ जन्म की ना
है नै छाती मे दुदव नाई ॥ नौमा सपादे अतथा
ने का दात बनाई ॥ गर्भ वास की कए एतुम का
हे कहु लाई ॥ १५८ ॥ स्त्री भोग केः मृत्यु ऐग
उपजी आई ॥ स्त्री साथ पाईः गो में बेटी लग

नाई ॥ पुत्र जन्म नये गरुडि उरने पाई ॥
स्त्री का मोहः मरुत का जाल एकै है नाई ॥
॥ १५८ ॥ एक मुख मैं हजार मुख मखाई ॥
॥ जाको मन जामे रमाः तासे मग नहे नाई ॥
नारी नाम कर्त कोः ईष वर्ण पाई ॥ काग वीर
खाय नहि द्योए कोई ॥ १६० ॥ पुरुष ने स्त्री
का भोग नहि द्योए नाई ॥ अपना वानी
द्योए नहिं सब कोई ॥ लसुन धी कुवा एष
पनात जे न वोई ॥ कोई लाधोय उजाल नहि
होई ॥ १६१ ॥ कसए चहत नहि रंग रंगा
ई ॥ स्त्री भोगी का मन घो गी नहि होई नाई
॥ पादि मदि सा मुखे उदय नहि आई ॥ वाँज
मत्री का पुत्र न उम जी आई ॥ १६३ ॥ हजा

रऔ गुण जो ती स्त्री का रूप बनाई ॥ हजार दो
ष जो ती स्त्री का चुची बनाई ॥ सब अधम वी
ष जो ती भगवनाई ॥ स्त्री में मोहनी जग में
और कोई नहि नाई ॥ १६३ ॥ भोग घाँस रु
वाई मोह का कीलव धाई ॥ स्त्री ने पुरुष को
सब का वैल बनाई ॥ तब नम चुचुका रे से
षे हो जाई ॥ मुख गमार मनुष्य में वैल अ
दि है नाई ॥ १६४ ॥ गर्भ होय जब पास न
जाय कोई ॥ भोर जन्म वाल बका एत न द्योती
नाई ॥ पापी नर पसु में पड़ु अधिकाई ॥ दु
नीया पसु का बात कहे न डाके कोई ॥ १६५ ॥
स्त्री प्रती सुन्दर रूप देखावते आई ॥ वंदन में
सार वस्तु नहि तील न आई ॥ नगा बरा कटि के

तुम देखतो नाई ॥ १६६ ॥ प्रेसे दो ना
ई समीई बहुरतहि कोई ॥ जग में मोह दे
खाई ॥ अणवकी घो नाई ॥ स्त्री मोहनी का
तुम प्रिती लाकए नाई ॥ भवसागर नरक
में दुवाई देई ॥ १६७ ॥ घाती चे वीष का
ए उपर दुद देखाई ॥ तुल्य रूप देखाई वी
षकी मोह पीलाई ॥ पुरुष सावकाः दलक
पतके मारी ॥ कीसिलोष बरतहि पाया के
ई ॥ १६८ ॥ ब्रह्म ज्ञान को मोह का अंगी
णी जलाई ॥ एज योग भुलायोः फरी घो दे
खाई ॥ मलीन कपट सा नुत उजल काई
॥ सत शंख ज्ञान मणः मलीण उजल होई ॥
॥ १६९ ॥ बाल बसा भ बले घट सुधि वि

साई ॥ मन सत शंख में ॥ तुम बाला उ नाई ॥ वी
णा अधिका सै ॥ प्रलहाद घो गपाई ॥ पहि पहि
वी दयाः ब्रह्मण पारिदत नाई ॥ १७० ॥ लिखी
लीखी का गज बहिदा र नाई ॥ बेटा दमी का शं
गत खर्दा र पाई ॥ नखल से चैती हजार को श
जाई ॥ वीष प्रमें सब का पुरुषार्थ हे नाई ॥ १७१ ॥
॥ योग समाधि का नाहि पुरुषार्थ कोई ॥ जै सै कु
ता ओर गा उ में ॥ पुद्गल काई ॥ दुनी या योग में
सब कुटा समान नाई ॥ पुरुषार्थ हिन नये से
नाहि योग पाई ॥ १७२ ॥ अपना साई काः दुद
मधुर आद पाई ॥ बत्ता सीधा चाखी दुद दो
ए बत रस पाई ॥ ब्रह्म ज्ञान मण कवहुत नाई

॥ चाखी सी का घोः तुम मनस मुझाई ॥ १०३ ॥
॥ जब पार्कि जाय मन का लज होई ॥ करे
मेन होय काः जग में कहा है भाई ॥ अ
तीरंग जो कोः ईक लख के भाई ॥ लकरी से
भी अगोनी प्रगत होई ॥ १०४ ॥ मन प
बरा का एंगरे से जोती प्रकास होई ॥ चले
न जाय ठिकाने पुरुंची न जाई ॥ हात उ
ठाई न बाये पेट खाली होई ॥ काम न क
रे काये सिद्धि कव होई ॥ १०५ ॥ धूर्त
कीर्त वीरव्य नाए खोज लाई ॥ हृदय ए
ज योग लाज तनहि कोई ॥ स्त्री का दुद
मथे मन मथे न कोई ॥ बात कहें कि या

काम कर्त नहि भाई ॥ १०६ ॥ छगरी का मुख
में कुंसे नहि अमाई ॥ गज ए ज घास कव हुं
ए खाई ॥ दोतान ए में वरे काम न होई ॥ ल
वी जल में दुवत नहि भाई ॥ नाउ कचा जल
उतर तनहि आई ॥ १०७ ॥ पापि का हृदय ध
र्म उपजी नहि आई ॥ धर्मी का हृदय पाप उप
जत नहि आई ॥ संग साथ सेः सब मन बीगल भा
ई ॥ १०८ ॥ ईजत नहि दुद का घर कु जात लई ॥
नको तुम मुख का मत संग भाई ॥ नायहि तन
खेती को कमाई ॥ ज्ञान ध्या ए न का ल्यो तुम
बैलव नाई ॥ १०९ ॥ जब मन होईः तब ल्योः
तुम जो ताई ॥ गंगा जमुना वहि हे खेत ल्योः
भाई ॥ अज पावी जयोः ओखली नहि जाई ॥

ईशबेतीमें नफाहें कहे हेत भाई ॥ १८० ॥
अभ्यासमृतदिशो वाली सुखम एव भाई ॥ वा
जाग्रतहृदवजाई तुमको सुनाई ॥ बीनासाई वा
पका पुत्रजन्महोई ॥ योगसमाधि पुरुषार्थ
करके भाई ॥ १८१ ॥ पापीष्ट कालब्रह्म नै
तुल्यदेखाई ॥ संसारमें जन्मनै योगत कहे भा
ई ॥ कोटि जन्म लग्नका लसाए तुल्यदेखाई ॥ का
एजा कमाप्रजा कोई न बचाई ॥ १८२ ॥ उचःनी
चजात पातवी चारु नहिं भाई ॥ पानीका बुदब
तासात नहे भाई ॥ सुठी वार्थि आई हातपसाए
जाई ॥ कीटका पुरुष कीटका स्त्री क्यौ नहें भा
ई ॥ १८३ ॥ सदा सुख नहोई ॥ नाहा कवी हँस
ताई ॥ मातापीता संसारमें जन्मदिने आई ॥ नव

सागर तुमको पार नहिं लगाई ॥ पुरुषको स्त्री
ने मुरकताई पारको बचाई ॥ कोई स्त्रीका नी
बीच भनहिं भाई ॥ १८४ ॥ जब आस एरे न
बचे जगमें कोई ॥ सुंदर घरको फोटे तुकए
को देई ॥ गर्भवाल खगी ॥ एई तदिमें लुका
ई ॥ १८५ ॥ जगमें स्त्रीका चरित्रकोई लाबे न
पाई ॥ पुरुषको वस्त्र कहे प्रसदु तपकएई ॥ गु
लाम पुरुषको बनायो जौ भन तुलाई ॥ वस्त्र
भुनाया छिः लीयो मन मुसुकाई ॥ १८६ ॥ जे
अर्थे वीर्यवा नाए ॥ वेठी ना मसमाई ॥ दएइवी
ठवा नाए परघट आस जाई ॥ नाए हरे मन धए
बल वीर्य भाई ॥ घरघरको बीछा उना खेले
भाई ॥ १८७ ॥ जब बाहे जगमें पुरुष घाए न

गार्इ ॥ ईस्की ताप को जो पटे लो ज्ञानी होई ॥ सु
ख गमाने पहूआ ॥ नही भाई ॥ सब पहिलेई
लुआ प्रीतीन कोई ॥ १८८ ॥ पंडित चुली सदा
पर आश्रय भाई ॥ एजाएत नीती चुली प्रजा
अर्ज लागई ॥ १८९ ॥ दुनी घा चुली संकाटी अव
हाल दाई ॥ मैथुन पुत्र वस्त्र गहना स्त्री चुला
ई ॥ १९० ॥ साधुका भूषणी घासनवी चारे को
ई ॥ सत गुणका गहाक नाहि जगमै भाई ॥ अ
ठम पाप गहाक लुती वीकाई ॥ अज्ञान सीतमा
असन पाप वहाई ॥ १९० ॥ उदय लुजे आई ॥ ए
त अंधा रोह हाई ॥ आसा मैली मनमै ॥ लगे सब
को भाई ॥ जैमै मैली कपट साभुण उजल
काई ॥ ज्ञान साधु नमण मैली ॥ मन लो धुका

ई ॥ १९१ ॥ हृदय नीर्मल ॥ आत्मा प्रकास हो
ई आई ॥ फल प्रकास कर्ण कादर्व तलगा
ई ॥ तत्व प्रकास कर्ण का ॥ देह उप जाई ॥ पुत्र
प्रकास कर्ण का ॥ कोई नवताई ॥ १९२ ॥ ला
री काली की जगमै नही पुरे देखाई ॥ आफुआ
दल पणै का आफु खो दाई ॥ नादि आफु खो दा
ई ॥ आफै आफु दवाई ॥ नरनाए एदि का वात
कहा स माई ॥ १९३ ॥ साधु संत का दंद वत
कोधी नाई ॥ मुख हासी साइ सुका मुका सीर
न माई ॥ नादौ एत अधेरी गजन वाद ट छा
ई ॥ पवण चले नीर्मल चंद्र मादेखाई ॥ १९४ ॥
॥ अज्ञान वाद हृदय मनमै छाई ॥ तासे नीर्मल
आत्मा नाहि ॥ तुम को देखाई ॥ ब्रह्म ज्ञान की ॥

प्रबल हृदय बहाई ॥ नीर्मल आत्मा आफ
प्रकाश में देखाई ॥ १८५ ॥ दुख मुख पीया
असी न जाणे कोई ॥ कुल आनंद सुख गति
बन जाने भाई ॥ न देवी आत्मा की भावः स
न मैं नहिं आई ॥ न देवी वस्तु स्त्री का भोग कै
सै पाई ॥ १८६ ॥ न देवी कासी जगं ना ठगई आ
ई ॥ न देवी जल कुप बो दाई पानी लाई ॥ न देवी
ग्रहन पति दुलीया देखाई ॥ मती मंद अंध सब
दुनीया गमाए ॥ १८७ ॥ अपना हृदय का ब्रह्म
काहे न बीचाए ॥ नाम रूपी मोह वस्तु को सब का
पीयाए ॥ लकरी जलावैं उठे धुवा की धाए ॥ हे
चग्रहे उठे मन की अवहाए ॥ १८८ ॥ मदी
बेलावैं पानीः न आई कटोए ॥ मन बंधुवा को

वैए अपका पी जए ॥ मन मदी न भागे रहे ए
क थोए ॥ पुण पाप दोषं बसैं मन उत आई
॥ १८९ ॥ अमन दुली सैं पंख काते मन मोक्ष
होई ॥ फेए की एया का फेए न थो लुमाए भा
ई ॥ फेए का ने द नहि जानत दुनीया कोई ॥ आ
ना पाए को गती नहिं जानत कोई ॥ २०० ॥ ता
स्का ए ब्रह्म ने द नहिं जानत भाई ॥ पुण पा
प को ना सकः जो देखावैं भाई ॥ बीना बीज
फेए नहिं देह उपजी आई ॥ एक मन बस्य
कर्ण का घल को भाई ॥ २०१ ॥ स्त्री गोश्र
पणा या को हृदय न भुलाई ॥ मए सैं हटी का
हृदय प्रेम न छोएई ॥ कते एह एक दी ए अ
बस्य सी ली जाई ॥ एम चंद्र सीता भोज करः

घरले आई ॥ २०२ ॥ अर्जुन साहा भाता
मुद्रक जीताई ॥ वीना करे कामका जन
हिं सिद्धि होई ॥ हरी भोग कः पुत्र प्रकास तु
मदे खाई ॥ ध्यान सैं तत्व प्रकास कोन सके
कोई ॥ २०३ ॥ एक आखी नहिं दोन का नाम
घो आई ॥ पलु पांदि मालीक बोलाय दोत आ
ई ॥ वीरु पाल ना कः वाल खजवान भई ॥
हृदि हृदय अपतानाहि जानत कोई ॥ २०४ ॥
वीर य भोग ॥ सबको मधुर स्वाद खाई ॥
ब्रह्म ज्ञान बाये सबको कराई ॥ कैसैं कुदा
एः कुवेला कुदिन जन्म पाई ॥ धीका जन्म
तुमा एः लीखी वीधाता आई ॥ २०५ ॥ जग

में सर्प काः काल गह दः हैं भाई ॥ एक स
प सत्प सैं हृदि हरी नाम लोई ॥ एक ही त सः
त सत्प काः गह दले समाई ॥ २०६ ॥ मेघा
षवर्दिः हृदि का पास आई ॥ गई घा आई
गह द का गले में लगाई ॥ जगत में एक मुल
बहु होते हैं भाई ॥ जी स ए सत्प समाई नहिं
काल कोई ॥ असत्प जो समाईः काल घट हि
में भाई ॥ २०७ ॥ सत्प समाईः किं बि मुनी श्र
त ए गई ॥ दुनी या असत्प खाई नर्क में दुवाः
ई ॥ ब्रह्म ज्ञान दिपाईः न दे खीली घो उघाटे ॥
मुख मरुष गईः नारी का सारी उघाटे ॥ २०८ ॥
जी सदर्क जे सैंः दुमनी ॥ २०९ ॥ कसी आ घो भा

ई ॥ बदन जे फीरे तुम नीत जाई ॥ जो दर्वा
जे आई तपाग को न सके कोई ॥ जो वेले गले
गर्ह दिहात हरक आई ॥ २०८ ॥ औ सै स्त्री का
नो एसा न हो नाई ॥ औ सै जाल में बधाई ॥ क
हुंच ले न पाई ॥ अंत धन अक त्या स्त्री का तु
ले हो आई ॥ स्त्री का पुरुष घर अपना गुलाम
लाई ॥ २१० ॥ संतो बजै सै लाभ ओ नहि
कोई ॥ सत संग जै सै धन ओ नहि नाई ॥ बीचा
जै सै ज्ञान ओ नहि कोई ॥ सम भाव जै सै सुख
ओ नहि नाई ॥ २११ ॥ ज्ञानी हुना कठी ए प
वात सहना नाई ॥ जो धडुठे बीछाँनीं व ची
त याद क आई ॥ तब बीपती पटेन ए जा स

म नाई ॥ दुख सो क उचें पट गरी व बीच आई ॥
॥ २१२ ॥ लीका लीकी धुँ में खेलत मुला
ई ॥ पेट की धंदा सब दो त दिन बीताई ॥ एत
दी ए जी दगी अपना अपाँ पै चताई ॥ सब दुति
या मुला घोः मायाः नाचः त चाई ॥ २१३ ॥
ई ती श्री बाबा जो ती गीरे संया ली प्रह पट
चीत चोपाई ओ दाहा ॥ २१४ ॥
पट उप का दुनी ग्राम नु ब्रको ॥ सम सुने
का बा लो बनाई ॥ बुधी ज्ञान ध्यान ॥ कि या
घो ग स माधि कर्णे का सब हे ॥ ओ अधम
पाप ॥ सब बीछत तपाग कर्णे का ॥ इस की ता
में सब हैं ॥ जो कोई देखने का ला देखी ले ॥ स

मुही बुझी ले ॥ कसके तो कही भवसागर
 पाउत ले ॥ नरके सोह संझा ही दुख अः
 पना भुताई ले ॥ ओ नाना साधु नानाः
 बीझा ॥ नाना ग्रथ देखी पहि ॥ ज्ञान पाईः
 भवसागर पाउत लेका ॥ साहा कहीं नहे
 लाई ॥ ईस में नदि नाउ ॥ वेए सब साम गृत
 पाहे ॥ ओ एक दु ती धुनका ॥ खोजने का न
 ही ॥ देखी लेउ पहि के तुम को मालुम हो गा
 बीना देखे प्रती ॥ तनहि आवें गा ॥ ॥ ॥
 ॥ ईती संवत् १९८३ साल सीती भाद्र १३
 गते ऐज १ आईतवाका नीनमा लेखी घा
 काहु हीमी दधु तोल व छेते जवाहा डुल
 जगलु अष्ट लेः लेखी घाकाहुं

चरैश जेह

